प्रैस विज्ञप्ति **09.0**2.202**1**

<u>अतिथि व्याख्यान</u>

अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ में आज दिनांक 09 फरवरी 2021 को संस्कृत विभाग के अंतर्गत अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ० कृष्णकांत गुप्ता जी के कुशल नेतृत्व में समय-समय पर इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है। इसी श्रंखला में शीर्षक "वैदिक साहित्य की उपादेयता" पर डिजिटल माध्यम से अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। श्री सोमनाथ संस्कृत यूनिवर्सिटी, वेरावल, (गुजरात) से प्रोफेसर 'विनोद कुमार झा' को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया। प्रो. झा जी ने डिजिटल माध्यम से वेद की वैज्ञानिकता और उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए सरल भाषा में अपने विचार हमसे सांझा किये। वेद के साथ-साथ उपनिषद, पुराण, आरण्यक और वेदांग का संक्षिप्त परिचय सांझा करते हुए वैदिक इतिहास के गौरव को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया। व्याख्यान के उपरांत विद्यार्थियों ने प्रश्नों के माध्यम से अपनी जिज्ञासा अतिथि के समक्ष रखी। अतिथि महोदय ने बड़ी प्रशंसा और सहजता के साथ सभी की जिज्ञासा को शांत किया। कार्यक्रम का आयोजन प्राचार्य डॉ० कृष्णकांत गुप्ता जी के मार्गदर्शन में संस्कृत विभागाध्यझा डॉ० पूजा सैनी की देखरेख में किया गया। अंत मे विभागाध्यझा डॉ० पूजा सैनी ने महाविद्यालय प्राचार्य डॉ० कृष्णकांत गुप्ता जी का, अतिथि महोदय का और सभी श्रोतागण का धन्यबाद ज्ञापन किया।

अग्रवाल महाविद्यालय में शिक्षा और आत्मनिर्भर भारत विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के डीन कॉलेज डवलपमेंट कौंसिल प्रो. युद्धवीर सिंह जी ने आज दिनांक 09.02.2021 को अग्रवाल महाविद्यालय परिसर में शिक्षा और आत्मनिर्भर भारत विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि नई शिक्षा नीति वर्तमान के बदलती परिस्थितियों को देखते हुए सही कदम है। शिक्षा का मानव जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शिक्षा को इतना बहुमुखी बनाया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी को शिक्षित व्यक्ति होने के साथ-साथ देश का जिम्मेदार व्यक्ति भी बना सके। शिक्षा का ढांचा महाभारत काल से लेकर, अंग्रेजों के आगमन और आजादी के बाद से अनेक बदलाव देखे जा सकते हैं। विवेकानंद जैसे महान व्यक्तित्व को हम देखते हैं तो पता चलता है कि शिक्षा कोई किताबी ज्ञान मात्र नहीं होता, बल्कि व्यावहारिक बुद्धि को दुनिया के सामने रखना है। प्राचीन काल से ही भारत की शिक्षा व्यवस्था बहुत संपन्न रही है। वेद, पुराण, दर्शन आदि अपरिमित ज्ञान से परिपूर्ण भंडार हमारे सामने है लेकिन आज हम हमारी पुरातन शिक्षा को भूलते जा रहे हैं । आज जरूरत है कि हमें पुरातन ज्ञान को फिर से संजोए और नई तकनीकों के माध्यम से जीवन में लागू करें। आज हम बहुत साधन संपन्न समय में जीवन यापन कर रहे हैं जरूरत है कि हम विश्व की अलग-अलग देशों के ज्ञान से परिचित होएं। स्वदेशी तकनीकों और उत्पादों से हमारी आर्थिक व्यवस्था सुदृढ़ होगी। यह विचारधारा हमें शिक्षा के माध्यम से विकसित करनी होगी। हमारी संस्कृति बेहद खास रही है हमें उसका पालन करते हुए नई शिक्षा को अपनाना चाहिए ना कि शिक्षा प्राप्त करते ही संस्कृति को भूल जाए। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ कृष्णकांत जी ने बताया शिक्षा मनुष्य के लिए सही समय और जागरूकता पैदा करने के लिए जरूरी है। विद्यार्थी जीवन में ही व्यक्ति के भविष्य में प्राप्त होने वाली सफलता की नीव रखी जा सकती हैं। डॉ. जयपाल सिंह जी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बताया कि नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है कि वो रोजगारोंन्मुख विद्यार्थी को कैसे आत्मनिर्भर बनाएं इसका ज्ञान प्रदान करती है। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के 300 विद्यार्थी तथा शिक्षकों डॉ रामचंद्र, मनमोहन सिंगला, सुभाष, उदिता कुंडू, डॉ. संतोष विश्नोई उपस्थित रहे।